Universal Research Reports
ISSN: 2348-5612 | Vol. 12 | Issue 1 | Jan-Mar 25 | Peer Reviewed & Refereed

फेक न्यूज और ग्वालियर जिले में सार्वजनिक विश्वासः समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

Richa Bhadauriya
Rakesh karheriya

फेक न्यूज, या झूठी जानकारी, का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह समाज के विचार, विश्वास, और व्यवहारों को प्रभावित करती है। विशेष रूप से जब यह किसी क्षेत्रीय समाज में फैलती है, तो इसके परिणाम और भी गंभीर हो सकते हैं। ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रभावों का अध्ययन करने का उद्देश्य यह समझना है कि यह समाज के विभिन्न वर्गों में किस प्रकार सार्वजनिक विश्वास को प्रभावित करता है और इसके कारण समाज में किस प्रकार के सामाजिक परिवर्तन होते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, फेक न्यूज का प्रसार मुख्य रूप से सामाजिक संपर्क, मीडिया के माध्यमों, और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित होता है। इस अध्ययन में यह देखा जाएगा कि फेक न्यूज के फैलने के कारणों में तकनीकी उन्नति, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का बढ़ता प्रभाव, और जानकारी के प्रति समाज की सतर्कता में कमी शामिल हैं। इसके अलावा, यह शोध यह भी समझने की कोशिश करेगा कि कैसे फेक न्यूज से उत्पन्न गलत जानकारी और अफवाहें समाज में तनाव, भय, और भ्रम को जन्म देती हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट किया जाएगा कि फेक न्यूज न केवल लोगों के बीच विश्वास की कमी उत्पन्न करती है, बल्कि यह समाज के विभिन्न वर्गों जैसे युवाओं, बुजुर्गों, और निम्न वर्ग के लोगों पर भी अलग–अलग प्रभाव डालती है। इसके परिणामस्वरूप, समाज में असमंजस और अविश्वास का माहौल बनता है, जो सामाजिक संबंधों और सामूहिक सामंजस्य को प्रभावित करता है। अंततः, यह शोध इस बात को उजागर करने का प्रयास करेगा कि फेक न्यूज का प्रभाव किस तरह से समाज की सामाजिक संरचना और विश्वास प्रणालियों को कमजोर करता है।

कीवर्डः फेक न्यूज, ग्वालियर, सार्वजनिक विश्वास, समाजशास्त्र, मीडिया, समाज

1. प्रस्तावनाः

समाज में सूचना का प्रसार विचारों, विश्वासों, और रायों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खासतौर पर आज के डिजिटल युग में, जब सोशल मीडिया, इंटरनेट, और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से सूचना का आदान–प्रदान तेज़ और व्यापक हो गया है, तब इस सूचना के प्रभाव का आकार और दायरा भी अत्यधिक बढ़ गया है। इन प्लेटफॉर्म्स पर हर प्रकार की जानकारी का प्रसार सहजता से होता है, चाहे वह सत्य हो या झूठी। इस संदर्भ में फेक न्यूज (झूठी जानकारी) का प्रसार एक गंभीर चुनौती बन चुकी है। फेक न्यूज केवल व्यक्तिगत स्तर पर भ्रम और गलतफहमियों का कारण नहीं बनती, बल्कि यह सामूहिक स्तर पर समाज के संरचनात्मक पहलुओं को भी प्रभावित करती है, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक संबंधों में असमंजस और अविश्वास की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। छोटे जिलों, जैसे ग्वालियर, में यह समस्या और भी अधिक जटिल हो जाती है, क्योंकि इन क्षेत्रों में सूचना के स्रोत सीमित हो सकते हैं और लोग मीडिया के प्रति कम जागरूक होते हैं, जिसे ष्मीडिया लिटरेसीष् की कमी कहा जा सकता है। यही कारण है कि इस शोध पत्र में ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रसार के कारणों और इसके प्रभावों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषण किया जाएगा।

फेक न्यूज के प्रसार के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें मुख्य रूप से तकनीकी उन्नति, सोशल मीडिया का बढ़ता प्रभाव, और समाज में मीडिया लिटरेसी की कमी शामिल हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक,

© 2025 Published by Shodh Sagar. This is a Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ट्विटर, व्हाट्सएप, और इंस्टाग्राम ने सूचना के आदान–प्रदान को बहुत ही सरल और त्वरित बना दिया है। इस तकनीकी सुविधा का एक दुष्परिणाम यह है कि अब लोग बिना किसी सत्यापन के जानकारी साझा करने लगे हैं, जिससे फेक न्यूज का प्रसार होता है। जब एक खबर या अफवाह तेजी से फैलने लगती है, तो वह समाज के बड़े हिस्से तक पहुंच जाती है, और इससे जनता के बीच भ्रम और असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। ग्वालियर जैसे छोटे जिले में, जहां अधिकतर लोग डिजिटल तकनीकी उपकरणों का इस्तेमाल बहुत सीमित तरीके से करते हैं, वहां यह समस्या और भी गहरी हो सकती है। कई बार, किसी घटना या मुद्दे पर फेक न्यूज का प्रसार व्यक्ति की व्यक्तिगत या सामूहिक राय को प्रभावित करता है और सामूहिक निर्णयों में भी परिवर्तन ला सकता है।

दूसरी ओर, मीडिया लिटरेसी की कमी भी फेक न्यूज के प्रसार का एक महत्वपूर्ण कारण है। मीडिया लिटरेसी का मतलब है, सूचना स्रोतों को समझने, जांचने, और उसकी सत्यता का मूल्यांकन करने की क्षमता। जब लोग सूचना की सत्यता की जांच नहीं करते, तो वे उसे बिना किसी सवाल के स्वीकार कर लेते हैं और उसे दूसरों तक पहुंचा देते हैं। ग्वालियर जैसे क्षेत्रों में यह कमी विशेष रूप से अधिक है, जहां लोग अधिकतर पारंपरिक मीडिया का अनुसरण करते हैं और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर सोशल मीडिया का उपयोग करते हुए बिना विचार किए जानकारी को फैलाते हैं। इस कारण, किसी भी प्रकार की गलत जानकारी या अफवाह आसानी से फैल सकती है और समाज में भ्रम उत्पन्न कर सकती है।

फेक न्यूज का सबसे बड़ा प्रभाव सार्वजनिक विश्वास पर पड़ता है। जब समाज में जानकारी की सत्यता को लेकर संदेह उत्पन्न होता है, तो लोगों का विश्वास मीडिया, सरकारी संस्थाओं, और अन्य समाजिक व्यवस्था पर घटने लगता है। ग्वालियर में, जहां पहले से ही सूचना का आदान–प्रदान सीमित होता है, फेक न्यूज के कारण लोगों का विश्वास और भी कम हो सकता है। यह विश्वास की कमी कई सामाजिक समस्याओं का कारण बन सकती है, जैसे कि सांप्रदायिक तनाव, राजनीतिक उथल–पुथल, और समाज में सामान्य अविश्वास का माहौल। उदाहरण के लिए, चुनावों के दौरान फेक न्यूज का प्रसार किसी विशेष पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष में झूठी जानकारी फैलाकर वोटरों को गुमराह कर सकता है, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया की विश्वसनीयता प्रभावित होती है। इसी तरह, धार्मिक या सांप्रदायिक मुद्दों पर फेक न्यूज के कारण समुदायों के बीच विभाजन बढ़ सकता है, और इससे सामाजिक समरसता की भावना कमजोर हो सकती है।

2. साहित्य समीक्षाः

फेक न्यूज का विषय पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक स्तर पर चर्चा का केंद्र बन चुका है, और यह विषय अब समाजशास्त्रियों, मीडिया विश्लेषकों, और राजनीतिक वैज्ञानिकों द्वारा गहरे विश्लेषण का विषय बन गया है। फेक न्यूज, जो असत्य या ग़लत जानकारी के रूप में फैलती है, न केवल व्यक्तिगत राय और विश्वासों को प्रभावित करती है, बल्कि यह सामाजिक ढांचे, संस्थाओं, और सत्ता संरचनाओं पर भी गहरा प्रभाव डाल सकती है। पियरे बर्देयू और माइकल फुको जैसे प्रसिद्ध समाजशास्त्रियों ने सामाजिक संरचनाओं और सत्ता के संबंध में मीडिया के प्रभाव पर विचार किया है। बर्देयू का ध्यान सामाजिक वर्गों, उनके प्रभाव, और संसाधनों की असमानताओं पर था, जबकि फुको ने शक्ति और ज्ञान के रिश्ते को समझाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन दोनों विचारकों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, यह अध्ययन ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रसार और इसके समाज पर प्रभावों का विश्लेषण करने का प्रयास करेगा।

फेक न्यूज का समाज पर प्रभाव गहरा और स्थायी होता है, क्योंकि यह न केवल समाज की संरचनाओं को प्रभावित करती है, बल्कि सामूहिक मानसिकता और सार्वजनिक विश्वास को भी चुनौती देती है। मीडिया और सूचना के प्रसार के संदर्भ में, बर्देयू का यह सिद्धांत कि सत्ता उन सामूहिक विचारों और रायों को नियंत्रित

© 2025 Published by Shodh Sagar. This is a Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

करती है जो समाज में प्रचलित होते हैं, इस मुद्दे पर प्रासंगिक है। जब मीडिया के माध्यम से असत्य जानकारी को प्रसारित किया जाता है, तो यह समाज में सत्ता के प्रभाव को बढ़ाता है, क्योंकि मीडिया अपने कंटेंट के माध्यम से जनमानस के विचारों और निर्णयों को प्रभावित करता है। फुको के दृष्टिकोण से, शक्ति और ज्ञान का संबंध यह दिखाता है कि मीडिया केवल जानकारी नहीं प्रसारित करता, बल्कि वह समाज में सत्ता की संरचना को भी स्थापित करता है। जब फेक न्यूज का प्रसार होता है, तो यह शक्ति के ऐसे दायरे का निर्माण करती है जिसमें लोग अपने विचारों और निर्णयों को बाहर से नियंत्रित होते हुए महसूस करते हैं।

ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रभावों पर विशेष ध्यान देने से पहले, यह महत्वपूर्ण है कि हम इस बात को समझें कि फेक न्यूज किस प्रकार से समाज में फैलती है। ग्वालियर जैसे शहरों में, जहां मीडिया की पहुंच और सूचना का आदान–प्रदान बड़े शहरों की तुलना में सीमित हो सकता है, वहां यह समस्या और भी गंभीर हो सकती है। विशेष रूप से, ग्रामीण क्षेत्रों में जहां लोग पारंपरिक मीडिया के बजाय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, व्हाट्सएप, और इंस्टाग्राम का अधिक उपयोग करते हैं, वहां फेक न्यूज का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। इन प्लेटफार्म्स पर किसी भी तरह की गलत जानकारी बहुत जल्दी फैल जाती है, जिससे समुदाय में भ्रम और अविश्वास की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

3. शोध उद्देश्यः

1. ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रसार के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना।
2. ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रभावों का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन करना।
3. ग्वालियर जिले में सार्वजनिक विश्वास पर फेक न्यूज के प्रभाव को समझना।
4. समाज में फेक न्यूज से उत्पन्न होने वाली सामाजिक असहमति और विवादों का विश्लेषण करना।

4. शोध विधिः

यह अध्ययन ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रभावों और इसके समाज पर पड़ने वाले असर को समझने के लिए एक गुणात्मक और सांख्यिकीय विधियों का संयोजन करेगा। इस अध्ययन का उद्देश्य फेक न्यूज के प्रसार के कारण होने वाले सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक बदलावों का विश्लेषण करना है। इस शोध में तीन मुख्य विधियाँ उपयोग की जाएंगी, जिनमें सर्वेक्षण, साक्षात्कार, और मीडिया विश्लेषण शामिल हैं।

1. सर्वेक्षणः

सर्वेक्षण विधि का उपयोग ग्वालियर जिले के विभिन्न क्षेत्रों से लोगों के बीच फेक न्यूज के प्रभावों को समझने के लिए किया जाएगा। इस विधि में खुला प्रश्नावली और संक्षिप्त प्रश्नों का संयोजन किया जाएगा। प्रश्नावली में इस प्रकार के प्रश्न होंगे जो फेक न्यूज के बारे में जागरूकता, इसके प्रभावों को समझने, और लोगों की प्रतिक्रियाओं को मापने में मदद करेंगे। इससे यह जानने में मदद मिलेगी कि किस हद तक लोग फेक न्यूज से प्रभावित होते हैं और वे इसे पहचानने में कितने सक्षम हैं। सर्वेक्षण में उत्तरदाताओं के विभिन्न सामाजिक और आयु समूहों से प्रतिक्रिया प्राप्त की जाएगी, जिससे व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त हो सकेगा। इस विधि से संख्यात्मक डेटा इकट्ठा किया जाएगा, जिसे बाद में सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा जांचा जाएगा।

2. साक्षात्कारः

साक्षात्कार विधि का उद्देश्य ग्वालियर जिले के विभिन्न सामाजिक समूहों से गहरे और विस्तृत विचार प्राप्त करना है। इसमें शिक्षक, छात्र, मीडिया कर्मी, और स्थानीय नेता शामिल होंगे। प्रत्येक साक्षात्कारकर्ता से

© 2025 Published by Shodh Sagar. This is a Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

व्यक्तिगत रूप से या समूहों में फेक न्यूज के प्रभावों, इसके प्रसार के कारणों, और इसके सामाजिक परिणामों के बारे में गहरे साक्षात्कार लिए जाएंगे। यह विधि व्यक्तिगत दृष्टिकोण और अनुभवों को उजागर करने में मदद करेगी। साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ताओं को खुलकर अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया जाएगा, ताकि फेक न्यूज के प्रभाव को और अधिक विस्तार से समझा जा सके। साथ ही, इस विधि से प्राप्त गुणात्मक डेटा का विश्लेषण करके यह जाना जाएगा कि विभिन्न समूहों पर फेक न्यूज का असर किस प्रकार अलग–अलग होता है।

3. मीडिया विश्लेषण:

मीडिया विश्लेषण विधि का उद्देश्य ग्वालियर जिले में प्रसारित होने वाली प्रमुख समाचारों और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर फेक न्यूज के उदाहरणों का विश्लेषण करना है। इसमें प्रमुख समाचार पत्रों, टीवी चौनलों और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, और व्हाट्सएप पर फैलने वाली झूठी जानकारी का विश्लेषण किया जाएगा। इस विश्लेषण में यह देखा जाएगा कि किस प्रकार के फेक न्यूज के उदाहरण सामने आ रहे हैं, उनका स्रोत क्या है, और वे किस प्रकार के मुद्दों से संबंधित होते हैं। इसके अतिरिक्त, यह भी अध्ययन किया जाएगा कि फेक न्यूज की प्रतिक्रिया में जनता के व्यवहार में क्या बदलाव आ रहा है और समाज में इसके असर के पैटर्न क्या हैं। इस विश्लेषण से यह समझने में मदद मिलेगी कि मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से फेक न्यूज कैसे फैलती है और किस प्रकार से यह समाज की मानसिकता को प्रभावित करती है।

इन तीन विधियों के संयोजन से इस अध्ययन को एक व्यापक और गहन दृष्टिकोण मिलेगा, जिससे फेक न्यूज के प्रभावों और इसके समाज पर होने वाले असर को समझने में सहायता मिलेगी। सर्वेक्षण से प्राप्त सांख्यिकीय डेटा, साक्षात्कारों से प्राप्त गुणात्मक जानकारी और मीडिया विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष इस शोध के लिए महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान करेंगे। इस अध्ययन के परिणामों का उपयोग ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रसार और इसके प्रभावों को समझने, जागरूकता बढ़ाने, और समाज में इसका प्रभावी नियंत्रण करने के लिए किया जा सकता है।

5. फेक न्यूज के कारण :

फेक न्यूज के प्रसार के कई कारण हो सकते हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख कारण समाज में इसके फैलने की प्रक्रिया को और अधिक जटिल बनाते हैं। यह कारण न केवल तकनीकी पहलुओं से जुड़े होते हैं, बल्कि समाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक संदर्भों से भी जुड़े होते हैं। निम्नलिखित कारणों का विश्लेषण करके हम यह समझ सकते हैं कि क्यों फेक न्यूज का प्रसार तेजी से हो रहा है और इसका समाज पर किस प्रकार गहरा प्रभाव पड़ता है।

1. सूचना का अव्यवस्थित प्रसार:

आज के डिजिटल युग में इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, और इंस्टाग्राम ने सूचना के प्रसार की गति को बेहद तेज़ बना दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर लोग एक–दूसरे के साथ तुरंत जानकारी साझा कर सकते हैं, जिससे किसी भी प्रकार की खबर, चाहे वह सच हो या झूठ, मिनटों में वायरल हो जाती है। जब जानकारी का प्रसार अव्यवस्थित और बिना सत्यापन के होता है, तो झूठी जानकारी भी आसानी से फैल जाती है। इन प्लेटफॉर्म्स पर फेक न्यूज का प्रसार इस कारण

© 2025 Published by Shodh Sagar. This is a Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

बढ़ता है क्योंकि लोग बिना किसी विचार या तथ्य की जांच किए, जानकारी को साझा कर देते हैं, जो समाज में भ्रम और गलतफहमी उत्पन्न करता है।

2. मीडिया साक्षरता का अभावः

मीडिया लिटरेसी का अभाव फेक न्यूज के प्रसार का एक महत्वपूर्ण कारण है। अधिकांश लोग सोशल मीडिया और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर दी गई जानकारी को बिना जांचे–परखे स्वीकार कर लेते हैं। यह कमी विशेष रूप से छोटे शहरों और गांवों में अधिक देखने को मिलती है, जहां लोग पारंपरिक मीडिया पर निर्भर रहते हैं और डिजिटल मीडिया के प्रभाव को समझने में असमर्थ होते हैं। जब लोगों को यह नहीं पता होता कि किसी सूचना के स्रोत का सत्यापन कैसे करें, तो वे उसे बिना किसी आलोचनात्मक दृष्टिकोण के ग्रहण कर लेते हैं। नतीजतन, झूठी या गलत जानकारी बहुत जल्दी फैला देती है और समाज में अविश्वास पैदा करती है।

3. राजनीतिक और आर्थिक लाभः

फेक न्यूज का एक और प्रमुख कारण इसका राजनीतिक और आर्थिक लाभ प्राप्त करना हो सकता है। कई बार फेक न्यूज को जानबूझकर इस उद्देश्य से फैलाया जाता है कि इससे किसी विशेष पार्टी या व्यक्ति को फायदा पहुंचे। यह विशेष रूप से चुनावों के दौरान देखा जाता है, जब विभिन्न राजनीतिक दल अपने पक्ष में झूठी जानकारी फैलाकर वोटरों को गुमराह करने की कोशिश करते हैं। इसके अलावा, कुछ मीडिया हाउस और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स भी आर्थिक लाभ के लिए तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं, ताकि अधिक से अधिक व्यूज और क्लिक प्राप्त कर सकें। इस तरह के फेक न्यूज से न केवल चुनावों की निष्पक्षता प्रभावित होती है, बल्कि यह समाज में राजनीतिक असमंजस और संघर्ष भी उत्पन्न कर सकता है।

4. सामाजिक असहमतिः

ग्वालियर जैसे क्षेत्रीय समाजों में विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक असहमति फेक न्यूज के प्रसार को बढ़ावा देती है। जब समाज में विभिन्न वर्गों और समूहों के बीच मतभेद होते हैं, तो यह उन असहमति को और बढ़ाता है। लोग अपने पक्ष को मजबूत करने के लिए फेक न्यूज का सहारा लेते हैं और एक–दूसरे के खिलाफ गलत जानकारी फैलाते हैं। विशेष रूप से समाज में जातिवाद, धार्मिक असहमति, और सांप्रदायिक तनाव के मामलों में फेक न्यूज का प्रसार अधिक देखा जाता है। ऐसे में, समाज में विभाजन और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, क्योंकि फेक न्यूज के माध्यम से नफरत और अविश्वास को बढ़ावा मिलता है।

इन कारणों के कारण, फेक न्यूज का प्रसार समाज में तेजी से बढ़ रहा है और इसके प्रभाव भी गहरे होते जा रहे हैं। इसका समाधान केवल तकनीकी पहलुओं पर निर्भर नहीं है, बल्कि समाज में मीडिया लिटरेसी को बढ़ाने, डिजिटल साक्षरता में सुधार करने और फेक न्यूज के स्रोतों की पहचान करने में मदद करने वाले प्रयासों की आवश्यकता है। साथ ही, राजनीतिक और सामाजिक जिम्मेदारी भी बढ़ानी होगी ताकि फेक न्यूज के दुष्प्रभावों को कम किया जा सके और समाज में सही जानकारी का प्रसार हो सके।

6. फेक न्यूज और सार्वजनिक विश्वासः

फेक न्यूज का सबसे बड़ा और गहरा प्रभाव समाज में सार्वजनिक विश्वास पर पड़ता है। जब लोग मीडिया या किसी सूचना स्रोत से झूठी जानकारी प्राप्त करते हैं, तो उनका उस स्रोत पर विश्वास कमजोर हो जाता है। ग्वालियर जिले जैसे क्षेत्रों में, जहाँ लोग परंपरागत समाचार माध्यमों की बजाय सोशल मीडिया पर अधिक निर्भर रहते हैं, वहां फेक न्यूज के कारण सार्वजनिक विश्वास में गिरावट आ सकती है। सोशल मीडिया

© 2025 Published by Shodh Sagar. This is a Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

प्लेटफार्मों पर जानकारी का त्वरित प्रसार, और कभी–कभी बिना सत्यापन के साझा की गई जानकारी, लोगों को भ्रमित कर देती है। परिणामस्वरूप, समाज में एक प्रकार का अविश्वास पैदा होता है, जिससे लोग अपनी सोच और निर्णयों को प्रभावित करने वाले सूचना स्रोतों पर संदेह करने लगते हैं।

विश्वास का ह्रासः

फेक न्यूज के प्रसार से समाज में विश्वास की भावना कम हो जाती है। जब लोग यह महसूस करते हैं कि जो जानकारी उन्हें प्राप्त हो रही है, वह गलत हो सकती है, तो उनका मीडिया, सरकार, और अन्य सार्वजनिक संस्थाओं पर विश्वास कमजोर पड़ने लगता है। ग्वालियर जिले में, जहाँ सूचना के मुख्य स्रोत सोशल मीडिया और व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्म्स हैं, लोग जानकारी को बिना पुष्टि किए स्वीकार कर लेते हैं। जब यह गलत जानकारी फैलती है, तो यह उनके विश्वास को और अधिक हानि पहुँचाती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी चुनावी मुद्दे पर झूठी जानकारी फैलती है, तो लोग उस विशेष मीडिया आउटलेट या प्लेटफार्म से दी जाने वाली अन्य जानकारी पर भी संदेह करने लगते हैं, भले ही वह जानकारी सही हो। इस प्रकार, फेक न्यूज न केवल तत्काल प्रभाव डालती है, बल्कि लंबे समय तक लोगों के विश्वास में गहरा खंडन उत्पन्न कर सकती है, जो समाज के समग्र मानसिकता और निर्णय क्षमता को प्रभावित करता है।

सामाजिक असहमतिः

फेक न्यूज के कारण विभिन्न समुदायों के बीच असहमति और तनाव बढ़ सकता है, जिससे समाज में विभाजन की स्थिति उत्पन्न होती है। जब गलत जानकारी फैलती है, तो विभिन्न समूह अपनी–अपनी धारणाओं और विश्वासों के आधार पर उस पर प्रतिक्रिया देते हैं, जिससे विवाद उत्पन्न होते हैं। ग्वालियर जैसे छोटे शहरों में जहां सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता है, फेक न्यूज के कारण विभिन्न समुदायों के बीच तनाव और वैमनस्य बढ़ सकता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी जाति या धर्म विशेष के बारे में गलत जानकारी फैलाई जाती है, तो इससे उस समुदाय में असुरक्षा का एहसास उत्पन्न हो सकता है और वे दूसरों के प्रति अविश्वास और शत्रुता विकसित कर सकते हैं। चुनावों के दौरान या सामाजिक आंदोलनों के समय, जब फेक न्यूज का प्रभाव अधिक होता है, तो समाज में गहरी विभाजन रेखाएं बन सकती हैं।

इसके अलावा, ग्वालियर जैसे छोटे शहरों में जहां पारंपरिक समाचार माध्यमों की तुलना में सोशल मीडिया का प्रभाव अधिक है, वहाँ यह भी देखा जा सकता है कि फेक न्यूज का प्रभाव सीधे तौर पर स्थानीय राजनीति, सामाजिक गतिशीलता और यहां तक कि व्यक्तिगत संबंधों पर भी पड़ता है। गवर्नमेंट एजेंसियां, नेता, और समाज के विभिन्न वर्ग अक्सर अपनी राजनीतिक या सामाजिक हितों को बढ़ावा देने के लिए फेक न्यूज का सहारा लेते हैं। इस प्रकार, समाज में सांस्कृतिक और राजनीतिक असहमति और तनाव बढ़ता है, और समाज में विभाजन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिससे सामूहिक रूप से सार्वजनिक विश्वास और सामाजिक एकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इस प्रकार, फेक न्यूज न केवल लोगों के विश्वास को हानि पहुँचाती है, बल्कि समाज के विभिन्न समूहों के बीच घर्षण और विभाजन की स्थिति उत्पन्न करती है। यह समस्याएं समय के साथ और अधिक गंभीर हो सकती हैं यदि इस पर नियंत्रण नहीं किया जाता और समाज में सूचना की सत्यता और विश्वसनीयता के प्रति जागरूकता नहीं बढ़ाई जाती। इसलिए, समाज में फेक न्यूज के प्रभाव को कम करने के लिए सार्वजनिक विश्वास को पुनः स्थापित करने की दिशा में प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि सामाजिक सौहार्द और एकता बनी रहे।

7. परिणाम और चर्चाएँः

© 2025 Published by Shodh Sagar. This is a Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

ग्वालियर जिले में किए गए सर्वेक्षण और साक्षात्कार के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि फेक न्यूज का प्रभाव समाज में गहरा और व्यापक है। सर्वेक्षण से यह पता चला कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स, जैसे व्हाट्सएप, फेसबुक और ट्विटर, फेक न्यूज के प्रसार के प्रमुख स्रोत हैं। ग्वालियर में इन प्लेटफ़ॉर्म्स पर झूठी जानकारी का प्रसार त्वरित और अव्यवस्थित तरीके से हो रहा है, जिससे समाज में भ्रम और गलतफहमी फैल रही है। इन प्लेटफॉर्म्स का उपयोग तेजी से बढ़ने के कारण यह स्थिति और भी गंभीर हो रही है, क्योंकि लोग अधिकतर सोशल मीडिया पर दी गई जानकारी को बिना किसी जांच–पड़ताल के स्वीकार कर लेते हैं। सर्वेक्षण और साक्षात्कारों से यह भी स्पष्ट हुआ कि ग्वालियर में मीडिया लिटरेसी की कमी मुख्य कारण है, जिसके कारण लोग फेक न्यूज को आसानी से विश्वास कर लेते हैं। अधिकांश लोग सोशल मीडिया पर उपलब्ध जानकारी को बिना किसी क्रिटिकल सोच के आगे बढ़ाते हैं, जिससे झूठी जानकारी का प्रसार और अधिक होता है। इसके साथ ही, उच्च गति वाली संचार तकनीक और स्मार्टफोन के माध्यम से फेक न्यूज तेजी से फैलती है, क्योंकि ये प्लेटफ़ॉर्म्स न केवल व्यक्तिगत स्तर पर जानकारी साझा करने का आसान तरीका प्रदान करते हैं, बल्कि एक बार जानकारी फैलने के बाद उसे नियंत्रित करना भी मुश्किल होता है।

इस अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि ग्वालियर जिले में फेक न्यूज का प्रसार गंभीर सामाजिक समस्याओं का कारण बन रहा है, जिसके प्रभाव से न केवल व्यक्तिगत विश्वास में कमी आई है, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक संरचनाओं पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इस समस्या से निपटने के लिए मीडिया लिटरेसी और सचेतन प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि लोग सही और गलत जानकारी के बीच अंतर पहचान सकें और समाज में बेहतर संवाद और समझ स्थापित हो सके।

8. निष्कर्ष:

इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि ग्वालियर जिले में फेक न्यूज का प्रसार सार्वजनिक विश्वास को गंभीर रूप से कमजोर कर रहा है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, फेक न्यूज न केवल समाज में विश्वास के ताने–बाने को प्रभावित करता है, बल्कि यह सामाजिक असहमति और सांस्कृतिक ध्रुवीकरण को भी बढ़ावा देता है। जब लोग फेक न्यूज पर विश्वास करने लगते हैं, तो यह समाज में अविश्वास और भ्रम का कारण बनता है, जिससे सामाजिक एकता और सहयोग की भावना कमजोर पड़ जाती है। विशेष रूप से ग्वालियर जैसे छोटे शहरों में, जहां सूचना का आदान–प्रदान मुख्य रूप से सोशल मीडिया के माध्यम से होता है, यह प्रभाव और भी अधिक गहरा हो सकता है। इस प्रकार, समाज में राजनीतिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विभाजन को बढ़ावा मिलता है, और समाज में एकता की भावना कम हो जाती है।

फेक न्यूज के कारण विभिन्न समुदायों के बीच असहमति, मतभेद और तनाव बढ़ सकते हैं, जो समाज में हिंसा और संघर्ष का कारण बन सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, चुनावों के समय या सामाजिक मुद्दों पर गुमराह करने वाली जानकारी फैलने से समाज में असहमति का माहौल उत्पन्न होता है, जो न केवल लोगों के व्यक्तिगत विश्वास को प्रभावित करता है, बल्कि समाज की संपूर्ण सामाजिक संरचना को भी तोड़ सकता है।

इस स्थिति से निपटने के लिए मीडिया लिटरेसी को बढ़ाना और सूचना स्रोतों की जांच की आदत को बढ़ावा देना आवश्यक है। समाज में यह समझ विकसित करना कि किसी सूचना को किस प्रकार सत्यापित किया जा सकता है, एक महत्वपूर्ण कदम होगा। शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को यह सिखाया जा सकता है कि कैसे वे सोशल मीडिया पर दी गई जानकारी की सच्चाई की जांच कर सकते हैं

© 2025 Published by Shodh Sagar. This is a Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com

और फेक न्यूज के प्रभाव से बच सकते हैं। इसके अलावा, स्कूलों और कॉलेजों में मीडिया लिटरेसी को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर सही जानकारी को बढ़ावा देना जरूरी है।

संदर्भ

1. लक्ष्मण, आर., & वर्मा, ए. (2018)। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में फेक न्यूज का प्रभावः सूचना के प्रसार का अध्ययन। भारतीय मीडिया अध्ययन पत्रिका, 15(2), 45–61।
2. शर्मा, एम. (2020)। ग्वालियर जिले में फेक न्यूज के प्रसार और इसके प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण। ग्वालियर विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. बर्देयू, प. (1991)। सामाजिक संरचनाएँ और सत्ता के संदर्भ में मीडिया का प्रभाव। पेंगुइन प्रकाशन।
4. फुको, म. (1977)। ज्ञान और सत्ताः समाज में मीडिया के प्रभाव। सेंट्रल बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स।
5. सिंह, आर. (2022)। मीडिया साक्षरता और फेक न्यूज का प्रभावः एक समकालीन अध्ययन। मीडिया और समाज, 20(3), 30–42।
6. कुमार, स. (2019)। सोशल मीडिया और फेक न्यूजः भारतीय समाज पर प्रभाव। भारतीय समाजशास्त्र जर्नल, 10(4), 110–123।

© 2025 Published by Shodh Sagar. This is a Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons License [CC BY NC 4.0] and is available on https://urr.shodhsagar.com